अंधेरे के साथ ही सुनहरे भविष्य की सुबह

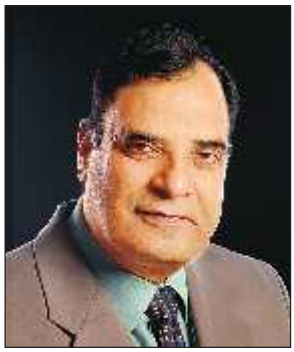

आलोक मेहता

''मैं शिद्दत के साथ महसूस कर रहा हूं कि कांग्रेस मंत्रिमंडल बहुत अक्षम तरीके से काम कर रहे हैं और जितना वे कर सकते थे, उतना भी नहीं कर रहे हैं। जरूरत से कुछ ज्यादा ही वे अपने को व्यवस्था के हिसाब से ढाल रहे हैं और इसको न्यायोचित ठहराने की मांग कर रहे हैं। इन सबसे ज्यादा खराब बात यह है कि अत्यंत कठोर तपस्या करके जनता के मन में हमने जो जगह बनाई थी, हमारा वह आधार भी खिसक रहा है। हम एकदम ऐसे सामान्य राजनीतिज्ञों की स्थिति में गिरते चले जा रहे हैं, जिनके काम का चरित्र रोजमर्रा के अवसरवाद से निर्धारित होता है। मैं समझता हूं कि कांग्रेस के अंदर अच्छी साख वालों की संख्या कम नहीं है, लेकिन उनके दिमाग में पार्टी के अंदरूनी झगड़ों का फितूर है। वे इस व्यक्ति या उस गुट को कुचलने की सोचने में व्यस्त रहते हैं।''

ये पंक्तियां एक शीर्षस्थ नेता के पत्र की हैं। सोचिये यह पत्र किसने लिखा होगा? सोनिया गांधी या राहुल गांधी ने अथवा मनमोहन सिंह ने? केंद्र सरकार और कांग्रेस शासित राज्यों के कई मंत्रियों के कारनामों से पार्टी की वर्तमान स्थिति पर ऐसी टिप्पणी पर किसी को आश्चर्य नहीं होगा। लेकिन यह महत्वपूर्ण टिप्पणी आज के किसी शीर्ष नेता की नहीं है। यह पत्र 28 अप्रैल 1938 को पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपने राजनीतिक गुरू महात्मा गांधी को लिखा था। आजादी से पहले उस समय भी राज्यों में कांग्रेस के मंत्रिमंडल सत्ता व्यवस्था में काम करने लगे थे। कांग्रेसी एक-दूसरे की जड़ें खोदने की कोशिश करने लगे थे। यही कारण था कि नेहरू की रिपोर्ट के बाद महात्मा गांधी ने अपने अखबार 'हरिजन' में लिखा- ''यदि कांग्रेस से अवैध और गड़बड़ तत्वों की सफाई नहीं होगी, तो इसकी शक्ति खत्म हो जाएगी और जब देश को वास्तविक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा तब कांग्रेस लोगों की आशाएं पूरी नहीं कर सकेगी।''

मतलब आजादी के 67 साल बाद भी कांग्रेस या अन्य बड़े राजनीतिक दलों के नेता आत्म-मंथन के दौर में भ्रष्ट और गड़बड़ लोगों को अलग करने की बात करें, तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। तिलक, गांधी, नेहरू, पटेल के युग में यदि राजनीतिक अंतर्कलह और गड़बड़ियां रही हैं, तो आज की राजनीति में त्याग की आदर्श 'रघुकुल नीति' और संपूर्ण क्रांति की उम्मीद कुछ ज्यादा नहीं होगी? हां, व्यवस्था में सुधार, बदलाव, गंदगी की सफाई का सिलसिला तेज किए जाने की कोशिश अवश्य होनी चाहिए। 1938 की तरह आज भी हर वर्ग, हर प्रदेश, हर संगठन में ईमानदार और समर्पित लोगों की कमी नहीं है। संकट केवल साहस के साथ खड़े होने का है।

हाल के महीनों में तेजी से उभरी आम आदमी पार्टी और जन आंदोलन से निकले अरिवन्द केजरीवाल की अप्रत्याशित सफलता पर युवा कांग्रेसी नेता राहुल गांधी चकित हुए तथा अपनी पार्टी को सबक लेने की बात कर रहे हैं। लेकिन कांग्रेस पार्टी की भारी भरकम सलाहकार मंडली के अनुभवी सदस्य क्या अपने युवा सहयोगियों को नेहरू परंपरा की याद नहीं दिला सकते हैं? जवाहरलाल नेहरू नागरिक स्वतंत्रता के सबसे बड़े हिमायती थे। वे उसे उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे, जितना आर्थिक समानता और समाजवाद को। अगस्त 1936 में उन्हीं के प्रयासों से 'इंडियन सिविल लिबर्टीज यूनियन' की स्थापना हुई थी। यह एक गैर दलीय, गैर सांप्रदायिक संगठन था, जिसका उद्देश्य नागरिक अधिकारों का हनन करने वाले हमलों के खिलाफ जनमत बनाना था। नेहरू ने उस समय घोषणा की थी- ''जब नागरिक अधिकारों का दमन होता है, तो राष्ट्र की तेजस्विता समाप्त हो जाती है और वह कोई भी ठोस काम करने लायक नहीं रह सकता।'' लोकतंत्र और नागरिक स्वतंत्रता की ऐसी विचारधारा और संस्कृति को जीवित रखने की जरूरत आज भी है। निराशा, मातम और पाखंड से किसी को लाभ नहीं हो सकता है। गरीबों और पिछड़ों को ज्ञान के प्रवाह के साथ आधुनिक आर्थिक प्रगति का समुचित लाभ मिलना चाहिए।

हाल के विधान सभा चुनावों की सफलता पर भाजपा के शीर्ष नेताओं की खुशी समझ में आती है, लेकिन दिल्ली विधान सभा चुनाव की विफलता पर क्या वे भी आत्म-मंथन करेंगे? सत्ता सुख के दौर यानी जून 2003 में भाजपा गठबंधन सरकार के प्रभावशाली मंत्री अरुण जेटली ने एक टी.वी. इंटरव्यू में कहा था- ''ये झोले वाले लिखकर कुछ भी सुझाव देते हैं। इन्हें क्या मालूम देश कैसे चलता है, व्यवस्था कैसे चलती है, न्याय कैसे मिलता है।'' दस साल बाद जेटली के गढ़ (वैसे वह स्वयं यूनिवर्सिटी के अलावा कोई चुनाव नहीं लड़े) दिल्ली में झोले वालों ने ही व्यवस्था पर कब्जा कर लिया है। यों जेटलीजी, मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में भी नब्बे के दशक तक कई झोले वाले रहे हैं। सत्ता में जेटली की नाराजगी वामपंथी/ समाजवादी विचारों वाले अथवा अरुणा रॉय जैसी जमीनी सामाजिक नेताओं-कार्यकर्ताओं के प्रति रहती थी। केजरीवाल भी अरुणा रॉय के सूचना अधिकार वाले आंदोलन से निकले हैं। यह बात अलग है कि उन्होंने अरुणा रॉय और अन्ना हजारे तथा उनके आदर्शों को पीछे धकेलकर सिंहासन तथा मुकुट को तरजीह दे दी। समस्या झोले की नहीं मानसिकता की है। प्रधानमंत्री पद के दावेदार नरेन्द्र मोदी भी किसी समय जे.पी. आंदोलन, नानाजी देशमुख और सुंदर सिंह भंडारी की झोला संस्कृति में पल-पोसकर बड़े हुए हैं। आम आदमी पार्टी ने 'टोपी' का महत्व बढ़ा दिया। कांग्रेस, भाजपा-संघ और समाजवादी पार्टी में अब वार्षिक आयोजनों में ही थोड़ी टोपियां दिखाई देती हैं। टोपियों की तरह आदर्शों-विचारों की बातें पार्टी अधिवेशनों, चुनावों या उत्सवों के दौरान होती हैं। सत्ता की मजबूरियों के नाम पर उन्हें अलमारियों में बंद कर दिया जाता है। आदरणीय अरुण जेटलीजी ने राजनीतिक दांव-पेच से श्रीमती सुषमा स्वराज को भले ही पीछे कर दिया हो, महिलाओं के व्यापक समर्थन और झोले वाले युवा कार्यकर्ताओं के बिना भाजपा भी राष्ट्रीय स्तर पर पुनः सत्तारूढ़ नहीं हो सकती है। मनमोहन सिंह और अरुण जेटली की आदर्श 'अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक अर्थ व्यवस्था' में गांवों के हितों का कोई प्रावधान नहीं है। कांग्रेस में 'सर्वोदयी' और भाजपा में 'स्वदेशी' आंदोलन की भावनाओं के लिए शायद ही कोई जगह दिखाई देती है। वैसे आम आदमी पार्टी की असली मार्गदर्शी कंप्यूटर/ मोबाइल व्यवस्था अमेरिकी इमारतों से संचालित होती रही है। डेढ़ करोड़ की आबादी पर तीन लाख एसएमएस देशभर से मंगवाने के बाद भारी बहुमत की भावना से सरकार बनाने का दावा क्या गंभीर सामाजिक क्रांति का प्रतीक माना जा सकता है? बहरहाल, हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि भवानी प्रसाद मिश्र की एक कविता की पंक्तियां हैं-

'हर एक नए क्षण के पथ पर पांवड़े बिछाओ, उसको भेंटो, एक रूप उससे हो जाओ।
उतने ताजे रहो कि जितना क्षण होता है, जीवन की गति का प्रमाण अक्षुण्ण होता है।'

नए वर्ष 2014 की अगवानी के लिए हो रही धूमधाम पर 2013 की गलतियों, गड़बड़ियों और उपलब्धियों का लेखा-जोखा मात्र करने से बेहतर यही है कि समाज, सरकार, संगठन आने वाले हर अच्छे-बुरे दौर का हिसाब-किताब ठीक करें। चाणक्य का एक प्रसिद्ध नीति वाक्य है- ''प्रत्यक्ष परोक्षनुमानैः कर्माणि परीक्षते।'' यानी कोई भी काम करने से पहले अपने सभी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष साधनों का पूरा अनुमान लगा लेना चाहिए। फिर चाहे शासक हों या शासित, उपलब्ध संसाधनों से ही लक्ष्य पूरे हो सकते हैं। उत्साह के नए दौर में 2014 में उज्ज्वल भविष्य की सफलताओं की शुभकामनाएं।

alokmehta7@hotmail.com